

**Faculty development program on “Quality Management in Engineering Materials”  
at UPTTI Kanpur during 20-25 June 2016**

The Faculty development program on Quality management in engineering materials was organized at UPTTI Kanpur during 20-25 June 2016. The program was inspired and funded by AKTU Lucknow. Faculty development program on “Quality Management in Engineering Materials” was focus on the total quality management in the field of engineering. Quality Management Systems have been evolved since industrial operation has taken place in this century. FDP has enhanced the knowledge and experience related to latest scientific achievement in the field of quality management systems and its applications in the field of materials preparation, characterization and their applications in various fields. Chief Guest of the program, Prof. B.K. Behera, Head of Textile Technology Department, IIT Delhi delivered his lecture on the Material engineering towards sustainability. Guest of honor, Prof(Dr.) K.K. Goswami , Director, IICT Bhadohi, spoke on the Green engineering (also known as green construction or sustainable building) refers to both a structure and the using of processes that are environmentally responsible and resource-efficient throughout a building's life-cycle: from sitting to design, construction, operation, maintenance, renovation, and demolition. Dr. Rakesh Sethi, Vice-president, Sri Lakshmi Cotsyn Ltd, spoke on the Six sigma relationship/ usage with QMS. On second day of the program, Dr. Padma S. Vaker, Professor at IIT Kanpur spoke on the Quality management in Natural Dye industry. Dr. Ashish Diwedi, IIT Kanpur, spoke on the Quality management in lather industry. Dr, T.C. Shami, Scientist-F, DMSRDE Kanpur spoke on Advances in the Defense textiles. On third day of the program, Dr. D. B. Shakyawar, Director-UPTTI & HBTI Kanpur delivered lecture on the Quality Management in Education. Dr. J.P. Singh, UPTTI Kanpur, spoke on the materials for invisibility and quality management through objective evaluation. Dr. Tulika Saxena, Step-HBTI Kanpur, spoke on total quality management. On fourth day of the program, Dr. Minika Katiyar, professor, IIT Kanpur spoke on material characterization. Prof. Vijay Kumar, CIPET Lucknow spoke on Plastics Materials- Properties & Applications. Dr. Alok Kumar, UPTTI Kanpur spoke on the fabric testing and quality management. Dr. J.P.Singh, UPTTI Kanpur spoke on the quality management through Fractal characterization.

On fifth day of *Faculty Development Programme* (on 24 June 2016), Mr. Swadesh Verma, Director, Bright moon innovations Pvt. Ltd. talked about Problem Solving Tools. Dr. M.K.Singh, Professor, UPTTI Kanpur, spoke on the quality management in fibre production. On the last day (25 June 2016), as Chief Guest Prof. J.P. Saini (Director- AITH KANPUR) share his Idea about Quality Management through ANN. In the end of the program, the chief guest distributed certificates to the participants. The program was co-ordinated by Dr. Jitendra Pratap Singh and Dr. Devendra Prasad.



को

सेल्फ  
शाने में  
ज में  
कोई  
और  
प्रांड

क्रिया  
प्राप्त  
वित  
एड  
और  
सि  
त्र  
त  
क

# यूपीटीआई के फेकल्टी डेवलपमेंट कोर्स प्रोग्राम में हल्के और मजबूत कपड़े की उपयोगिता पर चर्चा, मेटल को करेगा रिलेस टेक्सटाइल धातु से बनेंगी बुलेट ट्रेनें तो कपड़े से इंजन के ब्लेड

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

वह दिन दूर नहीं जब कपड़ा (टेक्सटाइल) धातु (मेटल) का स्थान ले लेगा। ऐसा कपड़ा मजबूती प्रदान करने के साथ हल्का होगा। इसका उपयोग एयरक्राफ्ट, बुलेट ट्रेन और कारों आदि में हो सकता है। यह मानना है आईआईटी, दिल्ली में टेक्सटाइल टेक्नालॉजी विभाग के प्रोफेसर व हेड डॉ. बीके बेहेरा का। उत्तर प्रदेश टेक्सटाइल टेक्नालॉजी इन्स्टीट्यूट (यूपीटीआई) के फेकल्टी डेवलपमेंट कोर्स में भाग लेने आए प्रोफेसर बेहेरा ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि वर्तमान में टेक्सटाइल स्ट्रक्चरल कम्पोजिट, मेडिकल टेक्सटाइल, नैनो टेक्नालॉजी इन टेक्सटाइल और स्मार्ट मैटीरियल्स पर शोध चल रहे हैं। जापान समेत कई



यूपीटीआई के फेकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में बोलते निदेशक डीबी शावधवार। देश ऐसे हैं जो इस पर अधिक शोध कर रहे हैं और इसमें उन्हें बड़ी सफलताएं भी मिल चुकी हैं। बुलेट ट्रेन में उपयोगी टेक्सटाइल: शावद ही पहले कभी किसी ने यह सोचा हो कि टेम्ब्राइन यानी इंजन के ब्लेड कपड़े से बनाए जाएंगे। पर अब ऐसा होने लगा है। टेक्सटाइल से

है। इसे टिराचू इन्जीनियरिंग में रखा जाता है। वह एक तरह का ऐसा मैटीरियल होता है जो हथुड़ी का स्थान ले सकता है। इसके अतिरिक्त नैनोटेक्नालॉजी पर आधारित टेक्सटाइल भी काफी उपयोगी साबित हो रहे हैं।

भारत नेचुरल कॉटन में आगे: आईआईटी, दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बेहेरा का कहना है कि अपना देश प्राकृतिक कॉटन में आगे है। डिफेंस से लेकर प्रोटेक्शन क्लोथिंग और यहां तक कि सियाचिन में प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने के लिए भी टेक्सटाइल अपने देश में तैयार किया जाता है। अब श्री डी वीविंग का जोर: आईआईटी, दिल्ली में डॉ. बेहेरा श्री डी वीविंग पर शोध कर रहे हैं। इससे तैयार कपड़े का उपयोग हवाई जहाज, कार की सीट आदि में किया जाता है।

टेक्सटाइल के क्षेत्र में

पर्यावरण सन्तुलन जरूरी यूपी-टीआई में संभवार से शुरू हुए पांच दिवसीय फेकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) का उद्घाटन करते हुए आईआईटी, भदोही के निदेशक प्रोफेसर केके गोस्वामी ने कहा कि हमें शोध को पर्यावरण के अनुकूल बनाना चाहिए। आईआईटी दिल्ली में टेक्सटाइल टेक्नालॉजी के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. बीके बेहेरा ने कहा कि जो भी कम्पोजिट तैयार हो उनका पर्यावरण के साथ तालमेल जरूरी है। श्री लक्ष्मी कॉटन के वाइस प्रेसीडेंट डॉ. राकेश सेंटी ने गुणवत्ता पर जोर दिया। इसके पूर्व यूपीटीआई के निदेशक प्रोफेसर डीबी शावधवार ने विचार रखे। समन्वयक डॉ. जितेंद्र सिंह और डॉ. देवेन्द्र प्रसाद ने विषय को जानकारी दी। इस अवसर पर प्रो मुकेश, प्रो प्रमोद आदि मौजूद थे।

शोधचान एनसीएस ही करेगा। एनसीएस . आ सकेगी।

रहा है।

# आईआईटी प्रोफेसर ने यूपी-टीआई एफडीपी में उठाया सवाल, बोले चर्म शोधन प्रक्रिया के आधुनिकीकरण से खत्म हो सकता है प्रदूषण फैशन-डिजाइन में ऑटोमेशन तो लेदर प्रॉसेसिंग में क्यों नहीं

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

आईआईटी के प्रोफेसर डॉ. आशीष द्विवेदी का कहना है कि अगर शहर की लेदर इण्डस्ट्री फैशन और डिजाइन के साथ चमड़े के शोधन की प्रक्रिया बदलने में भी धन खर्च करती तो शायद इस इण्डस्ट्री पर संकट नहीं आता। इस इण्डस्ट्री को चर्म तैयार करने के क्षेत्र में जो ऑटोमेशन करना चाहिए था वहीं नहीं किया गया है। उत्तर प्रदेश टेक्सटाइल टेक्नालॉजी इन्स्टीट्यूट (यूपीटीआई) में चल रहे फेकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) के दूसरे दिन मंगलवार को 'बॉल्टी मैनेजमेंट इन लेदर इण्डस्ट्री' विषय पर डॉ. द्विवेदी ने कहा कि नगर की लेदर इण्डस्ट्री में प्रबंधन की कमी है। यहां के उद्योगपतियों ने आधुनिक

तकनीक का इस क्षेत्र में इस्तेमाल नहीं किया। जो भी तकनीक इस्तेमाल की गई वह लेदर तैयार हो जाने के बाद उत्पाद तैयार करने में की गई। तो रुक सकता है प्रदूषण: डॉ. द्विवेदी ने कहा कि नगर में लेदर प्रॉसेसिंग में जो तकनीक इस्तेमाल की जा रही है वह जमाने पुरानी है। अभी भी इसका पूरा काम हाथों से किया जाता है। यह मजदूरों को भी नुकसान पहुंचाता है और इससे प्रदूषण भी नहीं रुक पाता। यहां अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उपयोग में लाई जा रही आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इससे मजदूरों को राहत मिलेगी। समय की बचत होगी। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि प्रदूषण पर रोक लग सकेगी। इस इण्डस्ट्री को मशीन आधारित बनाना होगा।



मंगलवार को फेकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में बोलते डॉ. टी सामी व प्रो. पदमा एस वांकर।



ताकि रंग न बनने पाए घातक

आईआईटी की प्रोफेसर डॉ. पद्मा एस वांकर ने 'बॉल्टी मैनेजमेंट इन नेचुरल डाइ इण्डस्ट्री' विषय पर अपने व्याख्यान में कहा कि आमतौर पर इण्डस्ट्री में जो डाइ (रंग) इस्तेमाल की जाती है वह फैब्रिक पर ठहर नहीं पाती और प्रदूषण के रूप में निकल जाती है। ऐसी तकनीक विकसित करने की जरूरत है जिससे फैब्रिक (बाग) पर रंग ठहर जाए। इसका लाभ यह होगा कि रंग प्रदूषण के रूप में बाहर नहीं जाएगा और इसका पूरा उपयोग भी हो सकेगा।

रक्षा क्षेत्र में सर्वाधिक उपयोग

डीएमएसआरडीई के डॉ. टी सामी ने डिफेंस टेक्सटाइल के बारे में बताया कि इसका क्षेत्र व्यापक है और उनका संस्थान लंबे समय से इससे जुड़े शोध में जुटा है। उसे अनेक उत्पाद तैयार करने में सफलता मिली है। एयरोस्पेस से लेकर मिलिट्री एप्लीकेशन तक में इससे जुड़े अनेक उत्पाद हैं जिसमें टेक्सटाइल का इस्तेमाल हो रहा है। टेक्सटाइल का उपयोग सियाचिन के लिए बलॉडिंग तैयार करने में भी काफी किया जाता है। व्याख्यान के बाद एफडीपी के समन्वयक डॉ. जितेंद्र प्रताप सिंह और डॉ. देवेन्द्र प्रसाद ने धन्यवाद दिया।

# कपड़ा भी बना सकता है मिस्टर इंडिया

में!

के पास  
ने हुई  
शिक्षा  
रिया ने  
न लिए  
था।  
जस्ट्रार  
आगे  
प्रपत्र  
गई?  
बाद  
री पर  
बंधक  
क जो  
गी।

कानपुर | वरिष्ठ संगठनात्मक

उत्तर प्रदेश टेक्सटाइल टेक्नॉलॉजिकल इन्स्टीट्यूट (यूपी-टीटीआई) एक ऐसे टेक्सटाइल पर शोध कर रहा है जो दिन में भी किसी को 'अदृश्य' करने में सक्षम रहेगा। यह वैसे ही होगा जैसे फिल्म 'मिस्टर इण्डिया' में अनिल कपूर बटन दबाते ही दूसरों की आंखों से ओझल हो जाता था।

यूपी-टीटीआई में इन दिनों पांच दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) चल रहा है। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम टेक्निकल यूनिवर्सिटी के इस एफडीपी में बुधवार को स्टेप-एचबीटीआई और यूपीटीटीआई के शिक्षकों ने प्रबंधन व शोध से जुड़े विषयों पर अपने विचार रखे।



डॉ. डीबी शाक्यवार



डॉ. जेपी सिंह

## हर स्टेप पर हो चेक

स्टेप एचबीटीआई की डॉ. तूलिका सक्सेना ने कहा कि छलिली तब ही संभव है जब शुरुआत से हर स्तर पर चेक रखा जाए। स्टेप छोटे होने चाहिए।

**अदृश्य होने वाला कपड़ा :** डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह ने दो व्याख्यान दिए जिसमें एक अदृश्य करने वाले कपड़ों पर था। डॉ. सिंह का कहना था कि रात के समय छिपने के लिए रंगों की भूमिका होती है पर दिन के समय किसी भी तरह के वस्त्रों से बचना आसान नहीं होता है।

## ऑडिट जरूरी

यूपीटीटीआई और एचबीटीआई के निदेशक प्रोफेसर डीबी शाक्यवार ने कहा कि एकेडमिक ऑडिट की आवश्यकता अधिक है। इससे गुणवत्ता बढ़ सकती है। उन्होंने एकेडमिक संस्थाओं की जानकारी दी जो नियंत्रण को बनाए गए हैं।

अभी तक जो शोध किए गए हैं उसमें प्रकाश की एक खास वेवलेंथ होती है जिसे शोषित करने से वह कपड़ा नहीं दिखता। कई तरह के प्रकाश के लिए जब तक ऐसी खोज नहीं हो पाती तब तक अदृश्य करने वाला कपड़ा तैयार नहीं हो सकता। शोध चल रहा है।

लोड कर आसानी से ले सकते हैं ट्रेन चालक और पायलट होने का अनुभव